Shodhshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2020 SHISRRJ | Volume 3 | Issue 5 | ISSN : 2581- 6306

बच्चों का नैतिक विकास
(Moral Development of Children)

कमलावती कुमारी
पीआरटी, दक्षिण पूर्व रेलवे मिश्रित प्रा. विद्यालय, आद्रा, पुरुलिया, प. बंगाल, भारत।

Article Info
Volume 3, Issue 5
Page Number: 96-101
Publication Issue :
September-October-2020

Article History
Accepted : 12 Oct 2020
Published : 20 Oct 2020

सारांश – बच्चों के नैतिक विकास में बहुत सारे सामाजिक तथा मनोवैज्ञानिक तथ्यों तत्वों का महत्वपूर्ण स्थान है तथा यह सभी तत्व बच्चों के नैतिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं।

मुख्य शब्द – नैतिक , विकास, मनोवैज्ञानिक, व्यक्ति, समाज, जन्म, कानून, बच्चे, सामाजिक नियम।

व्यक्ति को समाज में रहने के लिए समाज के कुछ आदर्शों (Ideals) और मानकों (Norms) को मानना पड़ता है, जो समाज उस व्यक्ति पर आरोपित करता है। समाज के द्वारा आरोपित इन बंधनों, दायित्वों व निर्देशों का व्यक्ति की व्यक्तिगत इच्छाओं से संघर्ष होना स्वाभाविक है।

जन्म के समान बच्चे के भीतर भले- बुरे की कोई भावना नहीं होती है। अतः वह नैतिकता रहित होता है। बच्चों में नैतिक विकास विभिन्न अवस्थाओं से गुजरता है और यह क्रमशः होता है। प्रारंभ में बच्चे सामाजिक नियमों (Social Rules), मानकों (Norms) अथवा कानूनों (Laws) को स्वीकार करने के लिए तत्पर नहीं होते हैं, परंतु बच्चों को ऐसा करने के लिए समाजीकृत किया जाता है।

"समाजीकरण की प्रक्रिया जिसके द्वारा व्यक्ति समाज में प्रचलित आचरण के नैतिक मानदंडों को अपने में समाहित करता है तथा सीखता है कि व्यक्तिगत इच्छाओं तथा सामाजिक दायित्व के संघर्ष को किस प्रकार से नियंत्रित किया जाए नैतिक विकास कहलाती है।" (गुप्ता एवं गुप्ता 2003)

नैतिकता की व्याख्या समाज एवं संस्कृति के संदर्भ में की जाती है। इसलिए नैतिक व्यवहार में किसी सार्वभौमिक मापदंड की कल्पना नहीं की जा सकती है। अलग – अलग समाज और सभ्यताओं में नैतिकता के पैमाने अलग- अलग होते हैं, कोई एक नैतिक विचार जो किसी समाज के लिए आदर्श है किसी अन्य समाज में अनैतिक हो सकता है। इसलिए मनोवैज्ञानिकों ने इसे सापेक्षिक अवधारणा (Relative Concept) के रूप में स्वीकार किया है। प्रत्येक समाज अपने सदस्यों के लिए कुछ नियमों, मान्यताओं, आदर्शों एवं मर्यादाओं की व्यवस्था करते हैं जिस के अनुरूप व्यक्ति को व्यवहार करना होता है। ऐसे व्यवहार ही नैतिक व्यवहार कहे जाते हैं।

Copyright: © the author(s), publisher and licensee Technoscience Academy. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution Non-Commercial License, which permits unrestricted non-commercial use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited

नैतिक विकास का अर्थ:

नैतिकता की प्रकृति स्थिर न होकर परिवर्तनशील होती है। इसका संबंध सामाजिक परिस्थिति से होता है। हरलॉक (Hurlock 1974) ने इसे परिभाषित करते हुए लिखा है कि, "सामाजिक समूह के नैतिक कोड के अनुरूप व्यवहार ही नैतिक व्यवहार है।" नैतिकता संबंधी नियम धार्मिक विश्वासों, नियमों, आस्था, न्याय, सत्यता, पवित्रता एवं तार्किकता से संबंधित होते हैं। जैसे नैतिकता के आधार पर सत्य बोलना चाहिए, प्रिय बोलना चाहिए, परन्तु वहीं नैतिकता यह भी कहती है कि अप्रिय सत्य नहीं बोलना चाहिए।

"सत्यम् ब्रूयात् प्रियं ब्रूयात्, न ब्रूयात सत्यम् अप्रियम्"

इस तरह यह बात स्पष्ट है कि नैतिक नियम विभिन्न काल एवं परिस्थितियों में अलग-अलग होते हैं। नैतिकता को एक आंतरिक वृत्ति माना जा सकता है जो व्यक्ति को उचित- अनुचित का बोध कराती है तथा मानवीय मूल्यों को बनाए रखने की प्रेरणा प्रदान करती है। इसे आत्म चेतना की अवस्था माना जा सकता है जिसमें व्यक्ति भलाई-बुराई, सत्य- असत्य, उचित- अनुचित, न्याय अन्याय में भेद करना सीखता है।

नैतिक मूल्यों द्वारा व्यक्ति मानव समाज के साथ अपने संबंधों को समझता है एवं सीखता है। नैतिक मूल्यों के विकास को माता-पिता एवं परिवार की अभिवृत्तियाँ, पोषण की विधियाँ तथा परिवार की सामाजिक आर्थिक दशा प्रभावित करती है। इसके साथ समूह आदर्श भी इसके विकास को प्रभावित करता है। अभिभावकों, शिक्षकों एवं अन्य संबंधित वयस्क लोगों का व्यवहार नैतिकता के क्षेत्र में बच्चों के लिए उदाहरण पेश करता है।

नैतिकता का अधिगम (Learning of Morality) :

बच्चों में नैतिक विकास के कुछ प्रमुख स्तर निम्न प्रकार से हैं -

1. **प्रयास एवं भूल के स्तर :** नैतिकता के विकास का प्रारंभिक स्तर प्रयास और भूल का है। लगभग 2 वर्ष की आयु तक बच्चे प्रयत्न और भूल के आधार पर ही सीखते हैं। इस स्तर पर परिवार में उसे नैतिकता के संबंध में जो कुछ सिखाया जाता है सीखता है फिर भूल जाता है, फिर सिखाया जाता है और फिर भूल जाता है। इस प्रकार प्रयास और भूल का क्रम चलता रहता है।
2. **पुरस्कार और दंड** : इसके माध्यम से भी बच्चों में नैतिक मूल्यों का विकास होता है। परिवार एवं स्कूल में बच्चे अनेक मूल्यों को प्रलोभन और भय के आधार पर सीखते हैं। उन्हें पुरस्कार और दंड द्वारा समय-समय पर यह बताया जाता है कि कौन सा व्यवहार और कार्य उचित है और कौन सा अनुचित। पुरस्कार और दंड या प्रलोभन और भय के आधार पर बच्चे नैतिक मूल्यों को तभी सीखते हैं जब परिवार और विद्यालय के नैतिक मूल्यों में कोई विशेष अंतर न हो।
3. **रूढ़ियों और प्रथाओं का कार्य** : श्रीवास्तव और उनके सहयोगियों (1978) ने प्रथा को परिभाषित करते हुए लिखा है कि, "प्रथा का अर्थ - समाज से मान्यता प्राप्त कार्य और व्यवहार करने की विधियाँ हैं जो एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को हस्तांतरित होती रहती हैं।" इसी प्रकार रूढ़ियों को परिभाषित करते हुए लिखा है कि, "रूढ़ियाँ ऐसी जन- रीतियाँ हैं जिनसे समूह कल्याण की भावना जुड़ी हुई होती है।" बच्चे जैसे जैसे बड़े होते हैं

उन्हें रूढ़ियों एवं प्रथाओं का पालन करना सिखाया जाता है क्योंकि इनके पालन करने से समाज एक स्थिर दिशा में काम करता है।

4. **भले बुरे की भावना का कार्य :** आधुनिक युग में यह माना जाता है कि भले बुरे की योग्यता का बच्चे अधिगम करते हैं। हाईजनेक (HIJ Eysenck, 2011) का विचार है कि बच्चे की भले बुरे की भावना को Super Ego या Inner light या Internalized Policeman कह सकते हैं। यह भले बुरे की भावना बच्चों की क्रियाओं को देखती रहती है। जब कभी बच्चे सामाजिक नैतिक मूल्यों से हटकर व्यवहार करते हैं तो यह भावना उसे ऐसा करने से रोकती है।
5. **दोष और शर्म का कार्य :** जब बच्चे में विवेक (Conscience) का इतना विकास हो जाता है कि इसकी चेतावनी उसे उस समय मिलने लगती है जब वह नीतियों के विरुद्ध कार्य करता है। तब इस अवस्था में वह अपने विवेक को व्यवहार के रूप में प्रयुक्त करता है। परंतु जब उसका व्यवहार उसके विवेक के अनुसार नहीं हो पाता तब वह शर्म एवं दोष का अनुभव करता है। परंतु बच्चे में शर्म एवं दोष उस समय भी उत्पन्न होते हैं जब उसमें उचित अनुचित की भावना का एक निश्चित मात्रा में विकास हुआ हो तथा उसमें आत्म आलोचना की योग्यता हो। हरलॉक ने दोष (guilt) के महत्व को स्पष्ट करते हुए लिखा है कि, "If a child felt no guilt, he would have little motivation to confirm to social expectations." (Hurlock,1978)

कुछ अध्ययनों (A. Bandura, 1969; P. A. Cowan, 1969) में यह देखा गया है कि बच्चा समूह में रहकर बहुत से ऐसे अनैतिक व्यवहार कर जाता है जो यदि वह अकेले की अवस्था में हो तो नहीं कर सकता। समूह में वह इस प्रकार का व्यवहार केवल इसलिए करता है कि समूह में उसकी स्थिति और प्रतिष्ठा बनी रहे।

नैतिक मूल्यों के अधिगम में बच्चे को अनेक कठिनाइयों का सामना भी करना पड़ता है। इनमें इनमें से कुछ कठिनाइयां निम्न प्रकार हैं -

1. नैतिक मूल्यों के विकास के लिए उपयुक्त मात्रा में बौद्धिक क्षमताओं का विकास आवश्यक है क्योंकि इन्हीं क्षमताओं के द्वारा बालक नैतिक मूल्यों के अर्थ का ज्ञान प्राप्त करता है और सीखता है। अगर बच्चे की बौद्धिक क्षमता में किसी तरह की रुकावट आ रही हो तो उसका नैतिक विकास भी इससे प्रभावित होता है।
2. जब परिवार और स्कूल आदि के नैतिक मूल्य भिन्न-भिन्न होते हैं तो इस अवस्था में बच्चा भ्रम में पड़ जाता है, कि परिवार में जो व्यवहार उचित समझा जाता है उसी व्यवहार के लिए स्कूल में दंड क्यों मिलता है?
3. बच्चों को नैतिक मूल्यों को सीखने में उस समय भी कठिनाई होती है जब परिवार के लोग नैतिक मूल्य के निर्णय ऋणात्मक पक्ष पर अधिक बल देते हैं तथा धनात्मक पक्ष पर कम बल देते हैं।

बच्चों में नैतिक विकास की निम्नलिखित अवस्थाएं आती हैं-

1. **बाल्यावस्था में नैतिक विकास** : बाल्यावस्था में अक्सर बच्चे उस कार्य या व्यवहार को अच्छा समझते हैं जिसमें उन्हें सुखद अनुभव होते हैं तथा उसे बुरा समझते हैं जिसमें उन्हें सुखद अनुभूति नहीं होती है। इस अवस्था में अनुशासन के द्वारा माता-पिता बालक को उचित- अनुचित का ज्ञान कराते हैं। बालकों को दंड

एवं पुरस्कार के द्वारा भले बुरे की शिक्षा देते हैं। माता- पिता को बच्चे को दंड उसी अवस्था में देना चाहिए जब बच्चा जानबूझकर अनैतिक व्यवहार करे।

2. **पूर्व बाल्यावस्था में नैतिक विकास:** पूर्व बाल्यावस्था लगभग 3 से 6 वर्ष की अवस्था है। इस अवस्था में बच्चा विशिष्ट परिस्थितियों से संबंधित नैतिक व्यवहार अवश्य सीख लेता है। अध्ययनों में यह भी देखा गया है कि मध्य वर्ग (Middle Class) के माता-पिता बच्चों के प्रति इस बात को लेकर अधिक कठोर होते हैं कि बच्चा समाज द्वारा मान्य व्यवहार को अपनाए। इस अवस्था के अंत तक बालक अनुशासित अवश्य हो जाता है। वह उचित अनुचित को ध्यान में रखकर व्यवहार करने लग जाता है।

   अध्ययनों में यह भी देखा गया है कि बाल्यावस्था में बालक को यदि अधिक दंड दिया जाता है तो उसका व्यवहार ऋणात्मक हो सकता है। ऐसे कुसमायोजित एवं अपराधी भी हो सकते हैं।

3. **उत्तर बाल्यावस्था में नैतिक विकास:** उत्तर बाल्यावस्था लगभग 6 से 12 साल तक की अवस्था है। इस अवस्था में बच्चे का नैतिक विकास मुख्यतः उसके समूह से सर्वाधिक प्रभावित होता है। इस अवस्था में वह सीखे गए नैतिक मूल्यों का सामान्यीकरण करने लग जाता है। वह समझने लग जाता है कि पैसा या वस्तु या खिलौना आज किसी भी चीज की चोरी करना अच्छी बात नहीं है। वह यह समझने लगता है कि माता-पिता, सहपाठी, अध्यापक तथा अन्य किसी से भी झूठ बोलना बुरा व्यवहार है।

   इस अवस्था में बच्चों को उसी समय दंड देना चाहिए जब वे जानबूझकर शैतानी करते हैं तथा उन्हें उस समय पुरस्कृत करना चाहिए जब वे उचित व्यवहार करते हैं। बच्चों में इस अवस्था में भले बुरे की भावना का विकास प्रारंभ होता है। इस अवस्था में नैतिक विकास में यह एक महत्वपूर्ण बात है।

4. **किशोरावस्था में नैतिक विकास :** इस अवस्था में बालक प्रत्येक उचित और अनुचित व्यवहार से संबंधित कारणों को समझने लग जाता है। वह अपने व्यवहार को समाज एवं समूह की प्रत्याशाओं के अनुसार सीखता है। अध्ययनों में यह देखा गया है कि वे किशोर बहुधा अपराधी प्रवृत्ति अपनाते हैं जो ऐसे परिवारों से संबंधित होते हैं जिनमें विवाह विच्छेद या किसी की मृत्यु हो गई होती है। इस अवस्था तक वे स्वेच्छा से नैतिक मूल्यों का पालन करने लग जाते हैं। इस अवस्था के अंत तक किशोरों में पर्याप्त मात्रा में सहनशीलता, उदारता आदि गुण विकसित हो जाते हैं। उनका नैतिक व्यवहार वयस्कों के समान होने लगता है। नैतिक दृष्टि से परिपक्व किशोर समाज के नियमों एवं नैतिक मूल्यों के अनुसार व्यवहार, भय के कारण न करके इसलिए करता है कि वह इन नियमों एवं मूल्यों को उपयुक्त समझता है।

बच्चों के नैतिक विकास को बहुत सारे तत्व प्रभावित करते हैं। नैतिक विकास को प्रभावित करने वाले कुछ प्रमुख तत्व निम्नलिखित हैं-

1. बुद्धि : बच्चों के नैतिक विकास को बुद्धि महत्वपूर्ण ढंग से प्रभावित करता है। बौद्धिक क्षमता के आधार पर ही वह विभिन्न नैतिक मूल्यों को समझता है एवं नैतिक मूल्यों से संबंधित प्रत्ययों का सामान्यीकरण करता है। अध्ययनों में यह देखा गया है कि जिन बच्चों में बुद्धि अधिक होती है उनमें मंदबुद्धि बालकों की

अपेक्षा नैतिक विकास अधिक मात्रा में तथा शीघ्र होता है। टरमन (L. M Terman, 1925) ने अपने अध्ययन में देखा कि मंदबुद्धि बालकों की अपेक्षा बुद्धि वाले बालकों में ईमानदारी, सहनशीलता, सत्यवादिता आदि गुण अधिक मात्रा में पाए जाते हैं।

2. आयु : आयु बढ़ने के साथ-साथ बच्चे में नैतिक मूल्यों एवं व्यवहार का विकास होता है। आयु बढ़ने के साथ-साथ भले-बुरे, उचित- अनुचित के ज्ञान की वृद्धि होती जाती है। आयु बढ़ने के साथ- साथ वह सत्य-असत्य के अंतर को भी समझने लग जाता है। सहानुभूति, सहनशीलता, ईमानदारी, सत्यवादिता आदि गुणों का विकास भी आयु बढ़ने के साथ-साथ होता जाता है।
3. लिंग : नैतिक मूल्यों का विकास लैंगिक कारक से भी महत्वपूर्ण ढंग से प्रभावित होता है। लड़के और लड़कियों के चरित्र एवं नैतिक गुणों में पर्याप्त भिन्नता दिखाई देती है। किशोरावस्था में लड़कों की अपेक्षा लड़कियों में चारित्रिक एवं नैतिक विकास अपेक्षाकृत तीव्र गति से होता है। लड़कियाँ लड़कों की अपेक्षा अधिक लज्जालु होती हैं। यह फर्क समाज द्वारा स्त्री– पुरुष के लिए अलग– अलग बनाये गए नियमों के कारण होता है। जिन समाजों में स्त्री पुरुष के बीच सामाजिक फर्क जितना कम है वहाँ यह कारक उतना ही कम असरदायी होता है।
4. परिवार: नैतिक मूल्यों को बच्चा सर्वप्रथम अपने परिवार से ही सीखना प्रारंभ करता है। बच्चे का लालन-पालन किस प्रकार किया जाता है इसका भी उनके नैतिक विकास पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। जिन बच्चों का पारिवारिक समायोजन अच्छा होता है वे बच्चे परिवार के सदस्यों के अनुकरण के आधार पर नैतिक मूल्यों को अपेक्षाकृत जल्दी सीख लेते हैं। अध्ययनों में यह देखा गया है कि जिन परिवारों का वातावरण दूषित होता है उन परिवारों के बच्चे मिथ्याभाषी, चोर, डरपोक, ईर्ष्यालु, घर से भागने वाले, बाल अपराधी, क्रोधी, दुराचारी आदि कुछ भी हो सकते हैं।
5. विद्यालय : बच्चों के नैतिक विकास में विद्यालय अपनी महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है। विद्यालय के शिक्षक, सहपाठी, वातावरण आदि सभी कुछ बच्चों के नैतिक विकास में कुछ न कुछ योगदान अवश्य करते हैं। यदि विद्यालय का सामान्य अनुशासन और व्यवस्था ठीक होती है तो वहां पढ़ने वाले बच्चों को चारित्रिक एवं नैतिक विकास के लिए सुंदर वातावरण मिलता है।
6. साथी समूह (Peer Group) : जब बच्चा स्कूल जाने लगता है तब उसका साथी समूहों से संबंध बनने लगता है। बच्चे इन मित्रों एवं साथी समूहों से बहुत अधिक प्रभावित होते हैं। वह अपने इन्हीं साथी समूहों से अनेक प्रकार के नैतिक मूल्यों को सीखते हैं। इस संबंध में हुए अध्ययनों में यह देखा गया है कि जिस प्रकार के चरित्र वाले बच्चे या साथी - समूह के बीच बच्चा रहता है उसी प्रकार के नैतिक मूल्य भी वह अनुकरण के आधार पर सीखता है। यदि उसके मित्रगण झूठ बोलने वाले, चोरी करने वाले आदि अनैतिक काम करने वाले होते हैं तो वह भी इसी प्रकार के व्यवहारों को सीखता है।

7. जनमाध्यम : आधुनिक समाज में बच्चा सिनेमा टेलीविजन और मैगजीन सोशल मीडिया आदि से बहुत अधिक प्रभावित होता है बच्चा जिस प्रकार के साहित्य पड़ता है उसी प्रकार का चरित्र उसमें विकसित होता है। आज टेलीविजन पर दिखाई जाने वाली फिल्म, धारावाहिक, कार्टूनों आदि से बच्चों का चरित्र बहुत अधिक प्रभावित हो रहा है। आज बच्चा टीवी पर हीरो को अगर पुरस्कृत होते हुए देखता है तो उसके चारित्रिक मूल्यों का अनुकरण अधिक करता है। वह हीरो या एक्टर उसके लिए एक आदर्श बन जाता है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि बच्चों के नैतिक विकास में बहुत सारे सामाजिक तथा मनोवैज्ञानिक तथ्यों तत्वों का महत्वपूर्ण स्थान है तथा यह सभी तत्व बच्चों के नैतिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची :

1. गुप्ता, एस. पी. और गुप्ता, अलका (2003). उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान, शारदा पब्लिकेशन, इलाहाबाद, पृष्ठ – 65
2. श्रीवास्तव, डी. एन और वर्मा, प्रीति (2007). बाल मनोविज्ञान एवं बाल विकास, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा, पृष्ठ-154
3. Bandura, A. (1969). Social learning of moral judgments. *Journal of Personality and Social Psychology, 11*(3), 275–279.
4. Cowan, Philip A., Langer, J., Judith H., Nathanson M. (1969) Social learning and Piaget's cognitive theory of moral development**,** Journal of Personality and Social Psychology 11(3):261-74
5. Eysneck, H.. (2011). Symposium: The Development of Moral Value in Children. British Journal of Educational Psychology. 30. 11 - 21. 10.1111/j.2044-8279.1960.tb01516.x.
6. Hurlock, Elizabeth B. (1974). Child Development, McGraw- Hill, New York, p. 234
7. Terman, L.M. (1925). *Genetic studies of genius. Mental and physical traits of a thousand gifted children.* Stanford Univ. Press.